कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (63) खण्ड - {125}

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें..........

प्रश्न 1- कोई भी हालत में किससे अपने को बचाना है ?

A- सज़ा से

B- लगाव से

C- माया से

D- कलियुगी दुनिया से

प्रश्न 2- किस को सबसे जास्ती महत्व देना होता है ?

A- स्वधर्म को

B- आत्मा और परमात्मा को

C- सृष्टिचक्र को

D- स्वदर्शन चक्र को

प्रश्न 3- हनुमान की पूजा करो बस चल पड़ा। दिखाते हैं संजीवनी बूटी ले आया... उसका भी अर्थ तुम बच्चे समझते हो। संजीवनी बूटी तो है -

A- मध्याजीभव

B- रूहानी ज्ञान

C- ज्ञान योग

D- मनमनाभव

प्रश्न 4- क्रोधी का काम है क्रोध करना और आपका काम है -

A- स्नेह देना।

B- स्वमान और सम्मान में रहना।

C- आत्मा, आात्मा को देखना।

D- चुप रहना।

प्रश्न 5- आत्मा है -

A- भृकुटी

B- अकाल तख्त

C- अकालमूर्त

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 6- इस समय तुम्हारा जीवन अमूल्य है, इसलिए -

A- सब कुछ सफल करना है।

B- शिवबाबा को याद करो।

C- इस शरीर की भी सम्भाल करनी है।

D- आत्मिक स्थिति में रहने की आदत डालो।

प्रश्न 7- सच्ची-सच्ची खुश-खैराफत है -

A- अतीन्द्रिय सुख की

B- किसी को बाप का परिचय देना।

C- स्वर्ग की

D- ज्ञान सुनाकर एक दो का कन्याण करना

प्रश्न 8- वन्डरफुल खुराक है -

A- मुक्ति की

B- ज्ञान और योग की

C- जीवनमुक्ति की

D- मनमनाभव की

प्रश्न 9- अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह पुरानी दुनिया बदलने वाली है। बिचारे मनुष्य नहीं जानते कि कौन बदलाने वाला है और कैसे बदलाते हैं। क्योंकि -

A- नास्तिक है

B- उन्हों को ज्ञान का तीसरा नेत्र ही नहीं है।

C- भक्ति मार्ग में है।

D- स्वयं भगवान ही आ कर यह ज्ञान देते हैं।

प्रश्न 10- बुद्धि में रहे हम कहां से खाते हैं।

A- सच्ची कमाईं से

B- याद से

C- ब्रह्मा भोजन

D- शिवबाबा के भण्डारे

प्रश्न 11- पुण्य आत्मा बनने वाले बच्चों को किस बात का बहुत-बहुत ध्यान रखना है ?

A- पैसा दान किसे देना है, इस बात पर पूरा ध्यान रखना है।

B- खान पान का।

C- पढ़ाई पर।

D- कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म न हो।

प्रश्न 12- आदि रत्न अर्थात् -

A- प्रभु के रत्न

B- मास्टर आदि देव

C- ईश्वरीय रत्न

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 13- इस ज्ञान की मुख्य दो सब्जेक्ट हैं ?

A- अल्फ और बे।

B- आत्मा और परमात्मा

C- पुरुषार्थ और प्रालब्ध

D- मनमनाभव और मध्याजीभव

प्रश्न 14- योग अग्नि का मतलब है ?

A- सर्व सम्बन्धों से एक बाप की याद

B- मनमनाभव

C- सतोप्रधान

D- याद की आग।

प्रश्न 15- सवेरे-सवेरे उठकर पहले-पहले -

A- अपने को आत्मा समझो

B- कहो शिवबाबा गुडमार्निंग

C- याद में बैठो

D- भगवान का धन्यवाद करो

प्रश्न 16- क्या बुद्धि में रखने से बुद्धि एकदम शीतल हो जाती है ?

A- आत्मा भाई भाई की स्मृति

B- ड्रामा के राज़ को

C- ज्ञान के पांईट

D- मीठा बाबा

भाग (63) खण्ड {125} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1- *C.माया से*

कोई से लगाव होगा तो उनकी याद आती रहेगी। फिर ईश्वर याद आ न सके। प्रतिज्ञा तोड़ते हैं तो सज़ा भी बहुत खानी पड़ती है, पद भी भ्रष्ट हो जाता है इसलिए जितना हो सके बाप को ही याद करना है। *माया तो बड़ी धोखेबाज है। कोई भी हालत में माया से अपने को बचाना है।*

उत्तर 2- *B.आत्मा और परमात्मा को*

सबसे जास्ती महत्व देना होता है आत्मा और परमात्मा को ज़ानने का। छोटी-सी आत्मा में कितना पार्ट नूंधा हुआ है जो बजाती रहती है। देह-अभिमान में आकर पार्ट बजाते हैं तो

स्वधर्म को भूल जाते हैं। अब बाप आकर आत्म अभिमानी बनाते हैं क्योंकि आत्मा ही कहती है कि हम पावन बनें। तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करो।

उत्तर 3- *D.मनमनाभव*

4 भुजा वाले, 8 भुजा वाले कितने चित्र बना दिये हैं। समझते कुछ भी नहीं। 8-10 भुजा वाला कोई मनुष्य तो होता नहीं। जिसको जो आया सो बनाया, बस चल पड़ा। कोई ने मत दी कि हनुमान की पूजा करो बस चल पड़ा। *दिखाते हैं संजीवनी बूटी ले आया... उसका भी अर्थ तुम बच्चे समझते हो। संजीवनी बूटी तो है मन्मनाभव!*

उत्तर 4- *A.स्नेह देना*

स्लोगन:- *क्रोधी का काम है क्रोध करना और आपका काम है स्नेह देना।*

उत्तर 5- *C.अकालमूर्त*

बाबा की बैठक यहाँ (भ्रकुटी में) है। यह है अकाल तख्त। *आत्मा अकालमूर्त है।* आत्मा कब छोटी बड़ी नहीं होती है। शरीर छोटा बड़ा होता है। जो भी आत्मायें हैं उन सभी का तख्त यह भृकुटी है। शरीर तो सभी के भिन्न-भिन्न होते हैं। किसका अकाल तख्त पुरुष का है, किसका अकाल तख्त स्त्री का है, किसका अकाल तख्त बच्चे का है।

उत्तर 6- *C.इस शरीर की भी सम्भाल करनी है*

इस सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल में *आपकी यह जीवन बहुत अमूल्य है, इसलिए शरीर की सम्भाल जरूर करनी है।* ऐसे नहीं यह तो मिट्टी का पुतला है, कहाँ यह खलास हो जाये! नहीं। इनको जीते रखना है। कोई बीमार होते हैं तो उनसे तंग नहीं होना चाहिए। उनको बोलो तुम शिवबाबा को याद करो।

उत्तर 7- *B.किसी को बाप का परिचय देना*

तुम बच्चे श्रीमत पर सभी की रूहानी खातिरी करते हो। *सच्ची-सच्ची खुश-खैराफत भी यह है किसको बाप का परिचय देना।* मीठे बच्चे जानते हैं बेहद के बाप द्वारा हमको

जीवनमुक्ति की सौगात मिलती है। सतयुग में भारत जीवन-मुक्त था, पावन था।

उत्तर 8- *B.ज्ञान और योग की*

बाप बहुत बड़ी ऊंची खुराक देते हैं तब तो गायन है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो। *यह ज्ञान और योग की कितनी फर्स्ट क्लास वन्डरफुल खुराक है* और यह खुराक एक ही रूहानी सर्जन के पास है। और किसको इस खुराक का मालूम ही नहीं है।

उत्तर 9- *B.उन्हों को ज्ञान का तीसरा नेत्र ही नहीं है*

अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह पुरानी दुनिया बदलने वाली है। *बिचारे मनुष्य नहीं जानते कि कौन बदलाने वाला है और कैसे बदलाते हैं! क्योंकि उन्हों को ज्ञान का तीसरा नेत्र ही नहीं है।* तुम बच्चों को अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है जिससे तुम सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जान गये हो।

उत्तर 10- *D.शिवबाबा के भण्डारे से*

यहाँ रहते शरीर निर्वाह अर्थ भी सब-कुछ करना पड़ता है। *बुद्धि में रहे हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं,* शिवबाबा को याद करते रहेंगे तो काल कंटक सब दूर हो जायेंगे। फिर यह पुराना शरीर छोड़ चले जायेंगे। बच्चे समझते हैं - बाबा कुछ भी लेते नहीं हैं। वह तो दाता है। बाप कहते हैं हमारी श्रीमत पर चलो।

उत्तर 11- *A.पैसा दान किसे करना है, इस बात का पूरा ध्यान रखना है*

पैसा दान किसे देना है, इस बात पर पूरा ध्यान रखना है। अगर किसको पैसा दिया और उसने जाकर शराब आदि पिया, बुरे कर्म किये तो उसका पाप तुम्हारे ऊपर आ जायेगा। तुम्हें पाप आत्माओं से अब लेन-देन नहीं करनी है। यहाँ तो तुम्हें पुण्य आत्मा बनना है।

उत्तर 12- *D.उपरोक्त सभी*

आदि रत्न समझने से ही अपने जीवन के मूल्य को जान सकेंगे क्योंकि *आदि रत्न अर्थात् प्रभू के रत्न, ईश्वरीय रत्न-तो कितनी वैल्यु हो गई इसलिए सदा अपने को आदि देव के बच्चे मास्टर आदि देव, आदि रत्न समझकर हर कार्य करो* तो समर्थ भव का वरदान मिल जायेगा।

उत्तर 13 - A अल्फ और बे

इस ज्ञान की मुख्य दो सब्जेक्ट हैं - अल़फ और बे। स्वदर्शन चक्रधारी बनो और बाप को याद करो तो तुम एवरहेल्दी और वेल्दी बनेंगे। बाप कहते हैं मुझे वहाँ याद करो। घर को भी याद करो, मुझे याद करने से तुम घर चले जायेंगे।

उत्तर 14 - D याद की आग

इसको कहा जाता है याद की आग। *योग अग्नि माना याद की आग*। आग अक्षर क्यों कहा है? क्योंकि इसमें पाप जल जाते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो - कैसे हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं।

उत्तर 15 - B कहो शिवबाबा गुडमॉर्निंग

“मीठे बच्चे - पतित से पावन बनाने वाले बाप के साथ तुम्हारा बहुत-बहुत लव होना चाहिए, *सवेरे-सवेरे उठकर पहले-पहले कहो शिवबाबा गुडमार्निंग''*

उत्तर 16- B ड्रामा के राज़ को

बाबा कहते हैं नींद को जीतने वाले बच्चे मामेकम् याद करो और विचार सागर मन्थन करो। *ड्रामा के राज़ को बुद्धि में रखने से बुद्धि एकदम शीतल हो जाती है*

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (63) खण्ड - {126}

प्रश्न 1- स्वदर्शन चक्रधारी नहीं हैं -

A- विष्णु

B- हम ब्राह्मण बच्चे

C- शिवबाबा

D- प्रजापिता ब्रह्मा

प्रश्न 2- मीठे-मीठे बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं जब कोई सभा मैं भाषण करते हो वा किसको समझाते हो तो घड़ी-घड़ी बोलो -

A- हम सब आत्मा हैं

B- अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो

C- श्रीमत पर चलो

D- स्वदर्शन चक्रधारी बनो

प्रश्न 3- बाप के साथ पूरा लव है इसकी एक मुख्य निशानी क्या है ?

A- हर कर्म बाप की याद में करेंगे।

B- श्रीमत पर चलते हैं।

C- शिवबाबा को गुडमार्निंग करेंगे।

D- लव रहेगा, कशिश होगी।

प्रश्न 4- निराकार का चित्र भी है पर किस मिसल ?

A- बिंदी

B- सालिग्राम

C- मनुष्य जैसा आकार नहीं

D- अति सूक्ष्म सितारा

प्रश्न 5- बाबा समझाते हैं वारिस किसको कहा जाता है ?

A- ब्राह्मण बच्चों को

B- जो भगवान को अपना वारिस बनाते हैं

C- मिलकियत देते हैं वहीं

D- जो हर कदम श्रीमत पर चलते

प्रश्न 6- कोई भी मनुष्य समझ नहीं सकते कि यह सब बी. के. किसके बच्चे हैं। किसके हैं ?

A- शिवबाबा के

B- ब्रह्मा

C- प्रजापिता ब्रह्मा के

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 7- तुम्हारी नज़र इस शरीर पर चली जाती है क्योंकि -

A- तुम बच्चे अपने को आत्मा नहीं समझते हो

B- अहंकार के कारण

C- देह-अभिमान है

D- 63 जन्मों से शरीर समझा है

प्रश्न 8- कर्म करते अपने को क्या समझो ?

A- साक्षी

B- आत्मा

C- अव्यक्त फरिश्ता

D- उपराम

प्रश्न 9- हम किस की वंशावली हैं ?

A- प्रजापिता ब्रह्मा की

B- निराकार शिवबाबा

C- धर्म पिताओं की

D- सिजरे की

प्रश्न 10- कोई- कोई पूछते हैं आपकी संस्था का उद्देश्य क्या है ?

A- बोलो नर से नारायण बनना

B- बोलो देवता बनना

C- बोलो सर्वगुण संपन्न बनना

D- बोलो कलयुगी दुनिया को सतयुगी बनाना

प्रश्न 11- कौन कोई काम के न रहे ?

A- भगवान को नहीं जानते

B- पत्थरबुद्धि

C- खुद को नहीं जानते

D- तमोप्रधान बुद्धि

प्रश्न 12- माया का स्वर्ग है ?

A- द्वापर से

B- कभी होता नहीं

C- कलियुग अन्त में

D- द्वापर कलियुग में

प्रश्न 13- तुम बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए, क्योंकि-

A- भगवान हमको पढ़ाते हैं।

B- देवता बनने वाले हैं।

C- वन्डरफुल ज्ञान मिलता है।

D- स्वयं भगवान ने चुना है।

प्रश्न 14- विश्व का राज्य- भाग्य लेने के लिए सिर्फ-

A- याद की यात्रा मे रहना है।

B- ज्ञान लेना है।

C- पवित्र बनना है।

D- स्व सेवा और विश्व सेवा साथ साथ करो

प्रश्न 15- संगमयुग पर सबसे जरूरी क्या है ?

A- स्वदर्शन चक्रधारी बनना है

B- देवता बनना

C- ब्राह्मण बनना

D- अव्यभिचारी बनना

प्रश्न 16- देह-अभिमान तोड़ने के लिए क्या करना है ?

A- करनकरावनहार की स्मृति में रहना है।

B- अपेने को आत्मा समझो।

C- सब बन्धनों से वृत्ति द्वारा किनारा करना।

D- एक के साथ सर्व रिश्ता निभाना।

भाग (63) खण्ड {126} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर 1 - A विष्णु

बाप समझाते हैं मीठे बच्चे गफलत मत करो। स्वदर्शन चक्रधारी बनो, लाइट हाउस बनो। स्वदर्शन चक्रधारी बनने की प्रैक्टिस अच्छी हो जायेगी तो फिर तुम जैसे ज्ञान का सागर हो जायेंगे। जैसे स्टूडेन्ट पढ़कर टीचर बन जाते हैं ना। तुम्हारा धन्धा ही यह है। सबको स्वदर्शन चक्रधारी बनाओ तब ही

चक्रवर्ती राजा-रानी बनेंगे इसलिए *बाबा सदैव बच्चों से पूछते हैं स्वदर्शन चक्रधारी हो बैठे हो? बाप भी स्वदर्शन चक्रधारी है ना।*

उत्तर 2 - B अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो

मीठे-मीठे बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं जब कोई सभा में भाषण करते हो वा किसको समझाते हो तो घड़ी-घड़ी बोलो अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा को याद करो। इस याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम पावन बन जायेंगे।

उत्तर 3 - B श्रीमत पर चलते हैं

बाप कहते हैं बच्चे बीती सो बीती। अब पहले अपने को सुधारो। खुद याद करेंगे नहीं, दूसरों को कहते रहेंगे, यह ठगी चल न सके। अन्दर दिल जरूर खाती होगी। *बाप के साथ पूरा लव नहीं है तो श्रीमत पर चलते नहीं हैं।* बेहद के

बाप जैसी शिक्षा तो और कोई दे न सके। बाप कहते हैं मीठे बच्चे इस पुरानी दुनिया को अब भूल जाओ।

*उत्तर 4- *B सालिग्राम*

बच्चे जानते हैं हम आत्माओं का रूहानी बाप वह एक है, उनका रूप दिखाई नहीं पड़ता है। *उस निराकार का चित्र भी है सालिग्राम मिसल।* उनको ही परमात्मा कहते हैं। उनको कहा ही जाता है निराकार। मनुष्य जैसा आकार नहीं है। हर वस्तु का आकार जरूर होता है। उन सबमें छोटे में छोटा आकार है आत्मा का।

उत्तर 5- B जो भगवान को अपना वारिस बनाते हैं

बहुत हैं जो वारिस बनने के राज़ को भी नहीं जानते हैं। बाबा के पास मिलने आते हैं परन्तु वारिस नहीं हैं। विजय माला में नहीं आ सकते। कोई अच्छे-अच्छे बच्चे समझते हैं हम तो वारिस हैं। परन्तु *बाबा समझते हैं यह वारिस है नहीं। वारिस बनने के लिए भगवान को अपना वारिस बनाना पड़े,*

उत्तर 6- C प्रजापिता ब्रह्मा के

कोई भी मनुष्य समझ नहीं सकते कि यह सब बी.के. किसके बच्चे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान कब होते हैं, यह दुनिया में किसको पता नहीं है। ब्राह्मण तो ढेर के ढेर हैं। परन्तु वह हैं कुख वंशावली। वह कोई मुख वंशावली ब्रह्मा की सन्तान नहीं हैं। तुम ब्राह्मण अलग हो, वो अलग हैं। तुम ब्राह्मण होते ही हो संगम पर, वह होते हैं द्वापर-कलियुग में। *यह संगमयुगी ब्राह्मण ही प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हैं।*

उत्तर 7- A तुम बच्चे अपने को आत्मा नहीं समझते हो

बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर तुम बच्चों को नॉलेज देता हूँ। *तुम बच्चे अपने को आत्मा नहीं समझते हो इसलिए तुम्हारी नज़र इस शरीर पर चली जाती है।* वास्तव में तुम्हारा इनसे कोई काम नहीं है।

उत्तर 8 - C अव्यक्त फरिश्ता

चलते फिरते सदैव अपने को निराकारी आत्मा और कर्म करते अव्यक्त फरिश्ता समझो तो सदा खुशी में ऊपर उड़ते रहेंगे। फरिश्ता अर्थात् ऊंची स्टेज पर रहने वाला।

उत्तर 9 - B निराकार शिवबाबा की

ब्राह्मणों में भी कुछ बच्चे पक्के हैं। मातेले भी बनेंगे, सौतेले भी बनेंगे। *हम निराकार शिवबाबा की वंशावली हैं।* जानते हैं बिरादरी कैसे बढ़ती जाती है। अभी ब्राह्मण बनने के बाद हमको वापिस जाना है।

उत्तर 10 - A बोलो नर से नारायण बनना

तुम तो सचमुच नर से नारायण बनने आये हो। *कोई-कोई पूछते हैं आपकी संस्था का उद्देश्य क्या है? बोलो नर से नारायण बनना - यह है हमारा उद्देश्य।* परन्तु यह कोई संस्था नहीं है। यह तो परिवार है। माँ, बाप और बच्चे बैठे हैं।

उत्तर 11 - A भगवान को नहीं जानते

बाप आकर समझाते हैं मुझे भगवान तो कहते हैं परन्तु जानते कोई भी नहीं हैं। *भगवान को नहीं जानते तो कोई काम के न रहे।* दु:ख में ही हे प्रभु, हे ईश्वर कह पुकारते हैं। परन्तु वन्डर है, एक भी मनुष्य मात्र बेहद के बाप रचता को जानते नहीं।

उत्तर 12 - C कलियुग अन्त में

मनुष्य समझते हैं - अभी तो स्वर्ग बन गया है। आगे थोड़ेही इतनी बड़ी बिल्डिंग्स आदि थी। तो कितना आपोजीशन है। भगवान स्वर्ग रचते हैं तो माया भी अपना स्वर्ग दिखाती है। *कलियुग अन्त है माया का स्वर्ग।* इसका फॉल होना है कितनी जबरदस्त माया है। तुमको उनसे मुँह मोड़ना है।

उत्तर 13 - A भगवान हमको पढ़ाते हैं

अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको शिवालय में ले जाते हैं तो *यह खुशी रहनी चाहिए ना। हमको बेहद का

भगवान पढ़ा रहे हैं।* बाप कहते हैं मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ।

उत्तर 14 - C पवित्र बनना है

विश्व का राज्य-भाग्य लेने के लिए सिर्फ पवित्र बनना है। जैसे बाप निरहंकारी बन पतित दुनिया, पतित तन में आते हैं, ऐसे बाप समान निरहंकारी बन सेवा करनी है।

उत्तर 15 - C ब्राह्मण बनना

मनुष्यों को यह पता नहीं है कि *संगमयुग को पुरूषोत्तम कहा जाता है। वास्तव में है पुरूषोत्तम युग, जबकि बाप आकर ऊंच ते ऊंच बनाते हैं। अभी तुम पुरूषोत्तम बन रहे हो। सबसे ऊंच ते ऊंच पुरूषोत्तम, लक्ष्मी-नारायण ही हैं। *अब फिर शूद्र से ब्राह्मण बन रहे हो*

उत्तर 16 - B अपने को आत्मा समझो

अब बाप बच्चों को समझाते हैं तुम अशरीरी आये थे फिर 84 जन्म ले पार्ट बजाया, अब वापिस जाना है। *अपने को आत्मा समझो, देह-अभिमान तोड़ो*। सिर्फ याद की यात्रा पर रहना है और कोई तकलीफ नहीं है।